फिर आई प्रभु-मिलन की बेला

उनकी दृष्टि जब सब पर पड़ती है तो चारों ओर गहन शांति छा जाती है और उनके महावाक्य सुनते-सुनते सभी का मन आनन्द विभोर हो जाता है।

प्रभु मिलन... आह यह शब्द ही कितना आनन्द दायक है। कौन नहीं चाहता इस अनुभव को । नास्तिक भी नास्तिक तभी बनते हैं जब उन्हें ये अहसास नहीं होता। तपस्वी भी इसी के लिए तपस्या करते हैं।

परन्तु क्या प्रभु मिलन होता है? यदि न होता तो ये इच्छा भी न होती। इच्छा ही सिद्ध करती है कि वह मिलता अवश्य है। उस मिलन में इतना सुख व आनन्द मिलता है कि बार-बार हम उसे याद करते हैं व भगवान की उसी रूप में महिमा भी गाते हैं। फिर वह हमारा परमपिता भी तो है और प्यार का सागर भी है, उसका मिलन तो हमारा अधिकार भी है। सोचे यदि उसने ज्ञान न दिया होता तो उसे ज्ञान का सागर त्रिकालदर्शी क्यों कहते। यदि वह अपने वत्सों को प्यार ही न देता तो उसके प्यार के सागर होने का महत्व ही क्या होता।

यह सत्य है कि हम उनसे मिलने नहीं जा सकते, क्योंकि उसके बारे में अनेक भ्रान्तियाँ हैं। इसलिए उन्हें ही हम सबसे मिलने इस धरा पर आना होता है। परन्तु वह निराकार जन्म-मरण से न्यारा है फिर वह आये कैसे? वे जन्म नहीं लेते, वरन् अवतरित होते हैं। जन्म व अवतरण में अन्तर है। तो वे आते हैं अपने परमधाम से मनुष्य तन में। पहले प्रजापिता ब्रह्मा के तन में आते थे और अब दादी हृदयमोहिनी जी के तन में अल्पकाल के लिए आते हैं।

वे जब आते हैं तो उनके वायब्रेशन्स उनकी उपस्थिति का आभास कराते हैं। वे जब बोलते हैं तो चहुंओर प्रभु-प्रेम की तरंगें प्रवाहित हो जाती हैं। उनकी दृष्टि जब सब पर पड़ती है तो चारों ओर गहन शांति छा जाती है और उनके महावाक्य सुनते-सुनते सभी का मन आनन्द विभोर हो जाता है।

आप भी अवश्य प्रभु-मिलन के क्षणों का इन्तज़ार कर रहे होंगे। ये परम सौभाग्य केवल उन ब्रह्मावत्सों को ही मिलता है जो जीवन को पवित्र बनाने के पथ पर चल चुके हैं। दूसरे तो इसे पहचान भी नहीं पायेंगे। ब्रह्मावत्सों में भी यह मिलन उनका तो अविस्मरणीय होता है जिनका चित्त एकाग्र हो गया है और जो रुहानियत से स्वयं का श्रृंगार कर चुके हैं। बाकि किसी को उनका प्यार मिलता है तो किसी को आत्म-तृप्ति। अनेक आत्माएं प्रभु-मिलन से महसूस करती हैं कि उनकी जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई।

यों तो प्रभु-मिलन प्रतिदिन अमृतवेले होता ही है परन्तु साकार में ये मिलन भी परम आवश्यक है। आप इसकी अवश्य तैयारी कर रहे होंगे। यह देख लें कि पिछली बार वे हमें जो होमवर्क दे गये थे, वो हमनें किया क्या? मैं याद दिला दूँ...

पहली प्रेरणा थी... बेफिक्र बादशाह बन जाओ। मेरे को तेरे में बदलकर फिक्र बाबा को देकर उनसे फखुर ले लो। कौन मुझे साथ दे रहा है, किसने मेरा हाथ पकड़ा है, स्वयं भगवान का हाथ मेरे सिर पर है-इस नशे में रहकर बादशाह बनो।

दूसरी बात थी -संतुष्टमणि बनो। हर हाल में संतुष्ट, हर बात में संतुष्ट। इसके लिए इच्छाओं का व सूक्ष्म कामनाओं का त्याग जरूरी है। साथ ही सर्व खजानों से सम्पन्न व योगयुक्त आत्मा ही संतुष्टमणि बन सकती है।

तीसरी मुख्य बात... सदा खुश रहो। भगवान को कैसा लगता होगा कि जब वे देखते हैं कि मेरे बच्चे भी खुश नहीं रहते। हमारी खुशी की तरंगें विश्व में दुखों के प्रकोप को कम करती हैं। खुश रहना अपने ऊपर है। चिन्तन को श्रेष्ठ कर दें तो मन सदा खुशी में डांस करता रहेगा।

चौथी अति महत्वपूर्ण बात... स्वयं को व्यर्थ से मुक्त करो। सचमुच कलियुग की इस काली रात में व्यर्थ के प्रकोप ने सभी का सुख-चैन छीन लिया है। ज्ञान-मनन से , स्वमान से, अशरीरीपन के अभ्यास से तथा वैराग्य की भावना व लक्ष्य की दृढ़ता से इस महामाया से बचा जा सकता है।

जिन आत्माओं ने ये होमवर्क अच्छी तरह किया है उनपर तो प्रभु प्रेम बरसेगा और उन्हें देखकर बाबा को गर्व भी होगा तथा उन्हें परमात्म दुआयें भी मिलेंगी। जिन्होंने जितना-जितना पुरुषार्थ किया, उतना-उतना अनुभव होगा। आप अवश्य चाहेंगे कि इस बार जब प्रभु-मिलन हो तो आपको श्रेष्ठतम अनुभव हो । हमारी भी बड़ी शुभकामना है कि आप प्रभु-प्रेम में मग्न हो जाएं, दुख-दर्द भूल जाएं व बाबा से निर्विघ्न भव का वरदान लेकर जाएं। तो यहाँ आने से पूर्व अपनी मनोस्थिति को श्रेष्ठ बनाने के लिए कुछ साधना करके आएं। क्योंकि मन जितना शान्त व एकाग्र होता है, अनुभव उतने ही सुन्दर होते हैं। हम यहाँ कुछ सरल साधनाएं प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. प्रतिदिन अमृतवेले अवश्य उठें और प्रभु मिलन करें। बाबा से बातें करें, पाँच स्वरुपों का अभ्यास करें। रोज बाबा से दृष्टि लें व विश्व को दृष्टि दें। महत्वपूर्ण है कि बाबा से तीन वरदान लें। विधि है... अनुभव करें कि सूक्ष्म वतन में हम बापदादा के समक्ष हैं, दृष्टि ले रहे हैं। फिर बाबा ने मस्तक पर तिलक लगाया व वरदान दिये... बच्चे विजयी भव, निर्विघ्न भव व सफलतामूर्त भव। इन्हें स्वीकार करें। अपनी पवित्रता को मजबूत करें। पवित्रता का मार्ग अपना लिया तो विपरीत चिन्तन भी क्यों? दृढ़ता व प्रतिज्ञा तथा साधना इसे आपकी शक्ति बना देगी।

2. प्रतिदिन ईश्वरीय महावाक्य सुनें। क्लास में जाकर एक घण्टा सच्चा सुख लें। याद रहे-स्वयं यों ही मुरली पढ़ लेने से सुख नहीं मिलता।

3. याद का चार्ट बढ़ाएं। चलते-फिरते उसका अभ्यास करें। स्वभान व अशरीरी पन की प्रेक्टिस सारे दिन में 10 बार अवश्य करें।

4. मौन का अभ्यास महत्वपूर्ण है। सप्ताह में यदि 2 दिन मौन रहे तो अति उत्तम। यदि यह सम्भव नहीं हो तो चार-चार घण्टे प्रतिदिन मौन में रहकर स्वचिंतन करें।

शान्तिवन में प्रभु-मिलन के दिन ब्राह्मणों के मेले से आनन्द भरे होते हैं। देव-कुल की महानात्माएं जब परस्पर मिलती हैं तो एक अनुपम हर्ष सब तरफ छा जाता है। ये पावन भूमि महान तीर्थ है जहाँ स्वयं भगवान आते हैं। यहाँ आना भी परम सौभाग्य की बात है। आप अवश्य पधारें। आपका प्रभु-मिलन अति कल्याणकारी हो। आपको महसूस हो कि बाबा से मिलने से हमारी 84 जन्मों की यात्रा सफल हो गई। अपने सारे बोझ अपने परमपिता को देकर आप हल्के होकर उड़ें और ब्राह्मण जीवन को वरदानों से भरें-यह हमारी श्रेष्ठ कामना है। **(ब्र.कु.सूर्य)**

भरतपुर। हरियाणा के राज्यपाल जगन्नाथ पहाड़िया को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.कविता।

जयपुर। ब्रह्माकुमारीज साइंटिस्ट एण्ड इंजीनियरिंग विंग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.मोहन सिंघल को 'ग्रीन आयडल अवार्ड' से सम्मानित करते हुए राजस्थान की राज्यपाल महामहिम मार्ग्रेट अल्वा।

बोटाद। गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.वर्षा तथा ब्र.कु.रजनी।

श्रीनगर। जम्मू एवं कश्मीर के कृषि मंत्री जनाब गुलाम हसन मीर को आध्यात्मिक संदेश देने के पश्चात ब्र.कु.सुदर्शन, ब्र.कु.रविन्दर तथा अन्य।

त्रिनिदाद। भारतीय उच्चायुक्त अमरजीत जी को संस्था की ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु.डॉ.सविता तथा ब्र.कु.हेमलता।

भाबा नगर। शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल के बच्चों को राजयोग मेडिटेशन के बारे में समझाने के पश्चात ब्र.कु.कृष्णा, ब्र.कु.शीतल, ब्र.कु.सागर तथा ब्र.कु.बसंत।

आनंदपुर साहिब। स्वास्थ्य मंत्री मदन मोहन मित्तल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रीमा व ब्र.कु.सरला।